ISSN: 2582-7219

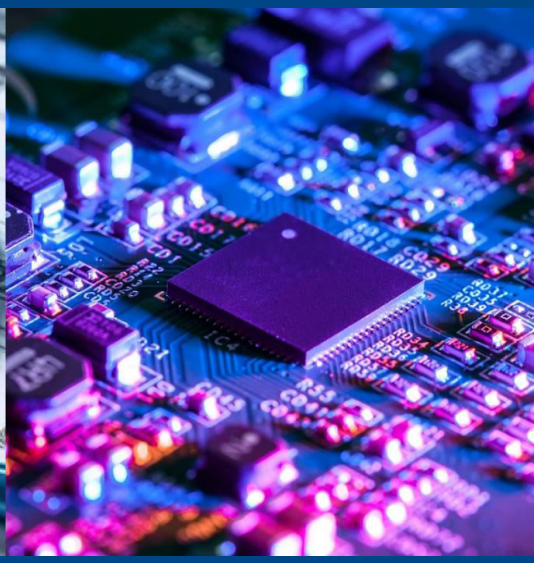

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

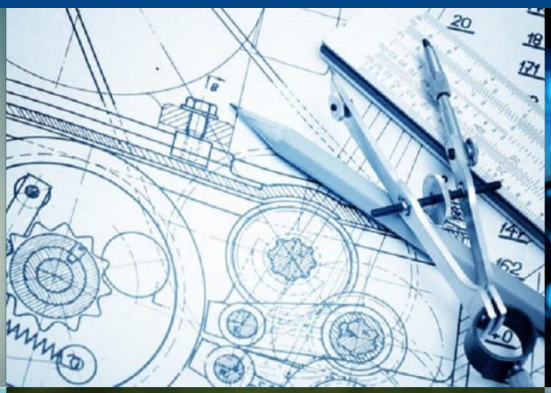

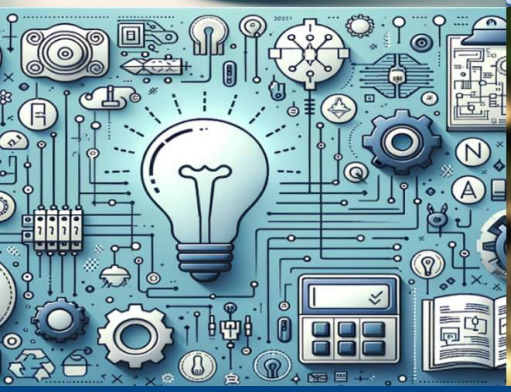

Impact Factor: 7.521

Volume 8, Issue 1, January 2025

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI: 10.15680/IJMRSET.2025.0801032

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

"फणीश्वर नाथ रेणु" का हिन्दी साहित्य में योगदान

Priyanka Kumari

MA Previous, Department of Hindi, Govt. Girls College, Kota, Rajasthan, India

सार: फणीश्वर नाथ रेणु ने हिन्दी साहित्य में आंचलिक उपन्यासों और कहानियों को एक नया आयाम दिया. वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के सबसे प्रभावशाली लेखकों में से एक थे. रेणु की रचनाओं में ग्रामीण जीवन का गहन चित्रण है. उनकी भाषा-शैली में आम आदमी की बातचीत, मुहावरे, लोकोक्तियां और कथन भंगिमाओं का सटीक प्रयोग है. फणीश्वर नाथ रेणु के योगदान:उन्होंने आंचलिक उपन्यासों और कहानियों को एक नया आयाम दिया. उन्होंने ग्रामीण जीवन का गहन चित्रण किया. उनकी भाषा-शैली में आम आदमी की बातचीत, मुहावरे, लोकोक्तियां और कथन भंगिमाओं का सटीक प्रयोग है. उन्होंने निबंध, रिपोर्ताज़, संस्मरण आदि गद्य विधाओं में भी लेखन किया. भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया. फणीश्वर नाथ रेणु की कुछ प्रमुख रचनाएं: मैला आंचल,परती परिकथा,जुलूस,पल्टू बाबू रोड,दीर्घतपा,कितने चौराहे,ठुमरी,एक आदिम रात्रि की महक

I. परिचय

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में प्रबल उपस्थिति रखने वाले उपन्यासकार-कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के पूर्णिया ज़िले के औराही हिंगना नामक गाँव में एक मध्यमवर्गीय किसान परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम शिलानाथ और माता का नाम पानो देवी था। उनकी आरंभिक शिक्षा पहले अररिया, फिर फारबिसगंज में हुई। मैट्रिकुलेशन परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्हें आगे की शिक्षा के लिए बनारस भेजा गया। लेकिन वहाँ अधिक समय टिक नहीं सके और बिहार लौट आए। उन्होंने भागलपुर के एक कॉलेज में दाख़िला लिया और सक्रिय राजनीति से संलग्न होने लगे। यहीं वह समाजवादी आंदोलन के प्रभाव में भी आए।

1942 के स्वतंत्रता आंदोलन में इन्होंने खुलकर भाग लिया था और इस कारण जेल भी गए। इनका जन्म स्थान भारत-नेपाल सीमा के निकट था। इस कारण उनकी स्वाभाविक रुचि नेपाल की सशस्त्र क्रांति में भी रही। 1950 में जब नेपाल की एकतंत्रीय राजशाही के विरुद्ध संघर्ष छिड़ा तो एक क्रांतिकारी के रूप में वह भी विद्रोही सेना के साथ रहे। वह विद्रोहियों द्वारा परिचालित नेपाल रेडियो के प्रथम डायरेक्टर जनरल भी बने। वह लंबे समय तक कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य रहे थे। उनके व्यक्तित्व का विकास एक सजग

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI: 10.15680/IJMRSET.2025.0801032

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

नागिरक और देशभक्त के साथ ही एक सृजनात्मक लेखक के रूप में होने लगा था।[1,2,3]रेणु 1952-53 में दीर्घकाल तक रोगग्रस्त रहे थे। इस कारण वह सक्रिय राजनीति से दूर हटकर साहित्य सृजन की ओर प्रवृत्त हुए। यद्यपि उनकी राजनीतिक सजगता अंतिम समय तक भी बनी रही थी और देश में आपातकाल का उन्होंने कड़ा विरोध किया था। 1954 में प्रकाशित हुए उनके पहले उपन्यास 'मैला आंचल' ने ही उन्हें हिंदी साहित्यिक जगत में स्थापित कर दिया।फणीश्वरनाथ रेणु को हिंदी साहित्य में एक आँचलिक युग की स्थापना का श्रेय दिया जाता है। यद्यपि आँचलिकता की प्रवृति का आरंभ प्रेमचंद युग से ही दृष्टिगोचर होने लगा था और आँचलिक उपन्यासों की विधा का सूत्रपात भी हो चुका था, लेकिन रेणु के उपन्यासों और कहानियों के साथ इसका पूर्ण विकास हुआ। उन्होंने अपने उपन्यास और कहानियों में ग्रामीण जीवन का गहन रागात्मक और रसपूर्ण चित्र खींचा है। उनकी विशिष्ट भाषा-शैली ने हिंदी कथा-साहित्य को एक नया आयाम प्रदान किया।'परती परिकथा' उपन्यास और 'मारे गये गुलफाम' कहानी, जिस पर राजकपूर अभिनीत प्रसिद्ध फ़िल्म बनी, के साथ उनकी ख्याति और बढ़ गई। उपन्यास और कहानी के अतिरिक्त उन्होंने निबंध, रिपोर्ताज़, संस्मरण आदि गद्य विधाओं में भी लेखन किया और व्यापक रूप से सराहे जाते हैं।भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया और उन पर डाक टिकट भी ज़ारी किया गया है।प्रमुख कृतियाँ-उपन्यास : मैला आँचल, परती परिकथा, जुलूस, पल्टू बाबू रोड, दीर्घतपा, कितने चौराहे।कहानी-संग्रह : ठुमरी, एक आदिम रात्रि की महक, अग्निखोर, मेरी प्रिय कहानियाँ, एक श्रावणी दोपहरी की धूप, अच्छे आदमी।चर्चित कहानियाँ : मारे गए गुलफाम, एक आदिम रात्रि की महक, लाल पान की बेगम, पंचलाइट, तबे एकला चलो रे, ठेस, संवदिया।रिपोर्ताज़/संस्मरण/निबंध : ऋणजल-धनजल, श्रुत-अश्रुत पूर्व, आत्म परिचय, वन तुलसी की गंध, समय की

II. शिला पर, नेपाली क्रांतिकथा।

इनकी लेखन-शैली वर्णणात्मक थी जिसमें पात्र के प्रत्येक मनोवैज्ञानिक सोच का विवरण लुभावने तरीके से किया होता था। पात्रों का चरित्र-निर्माण काफी तेजी से होता था क्योंकि पात्र एक सामान्य-सरल मानव मन (प्रायः) के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता था। इनकी लगभग हर कहानी में पात्रों की सोच घटनाओं से प्रधान होती थी। एक आदिम रात्रि की महक इसका एक सुंदर उदाहरण है।[4,5,6]

रेणु की कहानियों और उपन्यासों में उन्होंने आंचलिक जीवन के हर धुन, हर गंध, हर लय, हर ताल, हर सुर, हर सुंदरता और हर कुरूपता को शब्दों में बांधने की सफल कोशिश की है। उनकी भाषा-शैली में एक जादुई सा असर है जो पाठकों को अपने साथ बांध कर रखता है। रेणु एक अद्भुत किस्सागो थे और उनकी रचनाएँ पढते हुए लगता है मानों कोई कहानी सुना रहा हो। ग्राम्य जीवन के लोकगीतों का उन्होंने अपने कथा साहित्य में बड़ा ही सर्जनात्मक प्रयोग किया है।

इनका लेखन प्रेमचंद की सामाजिक यथार्थवादी परंपरा को आगे बढाता है और इन्हें आजादी के बाद का प्रेमचंद की संज्ञा भी दी जाती है। अपनी कृतियों में उन्होंने आंचलिक पदों का बहुत प्रयोग किया है।

III. विचार-विमर्श

रेणु को जितनी ख्याति हिंदी साहित्य में अपने उपन्यास मैला आँचल से मिली, उसकी मिसाल मिलना दुर्लभ है। इस उपन्यास के प्रकाशन ने उन्हें रातो-रात हिंदी के एक बड़े कथाकार के रूप में प्रसिद्ध कर दिया। कुछ आलोचकों ने इसे गोदान के बाद इसे हिंदी का दूसरा सर्वश्रेष्ठ उपन्यास घोषित करने में भी देर नहीं की। हालाँकि विवाद भी कम नहीं खड़े किये उनकी प्रसिद्धि से जलनेवालों ने इसे सतीनाथ भादुरी के बंगला उपन्यास 'धोधाई चरित मानस' की नक़ल बताने की कोशिश की गयी। पर समय के साथ इस तरह के झूठे आरोप ठण्डे पड़ते गए।

रेणु के उपन्यास लेखन में मैला आँचल और परती परिकथा तक लेखन का ग्राफ ऊपर की और जाता है पर इसके बाद के उपन्यासों में वो बात नहीं दिखी।
तीसरी कसम पर इसी नाम से राजकपूर और वहीदा रहमान की मुख्य भूमिका में प्रसिद्ध फिल्म बनी जिसे बासु भट्टाचार्य ने निर्देशित किया और सुप्रसिद्ध गीतकार शैलेन्द्र इसके निर्माता थे। यह फिल्म हिंदी सिनेमा में मील का पत्थर मानी जाती है। हीरामन और हीराबाई की इस प्रेम कथा ने प्रेम का एक अद्भुत महाकाव्यात्मक पर दुखांत कसक से भरा आख्यान सा रचा जो आज भी पाठकों और दर्शकों को लुभाता है।उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया।
अंग्रेजों से आजादी मिलने के बाद देश के सामने असल समस्या यह थी कि इतने वर्षों से रुकी पड़ी विकास की गाड़ी को पटरी पर कैसे लाया जाए? साहित्य के ऊपर भी ये बड़ी जिम्मेदारी थी कि वो जनप्रतिनिधियों, नागरिक समाज और जनता को लगातार उनके कर्तव्यों, अधिकारों और विकास के संबंध में जागरूक करते रहें। साहित्यकारों ने विकास के लिये अपनी कलम तो उठाई लेकिन

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI: 10.15680/IJMRSET.2025.0801032

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

उनकी रचनाएँ सिर्फ शहर केंद्रित विकास तक ही सीमित रहीं। साहित्य में गाँवों-अंचलों के लिये रिक्त पड़े इस स्थान की पूर्ति की फणीश्वरनाथ रेणु ने।[7,8,9]

ग्रामीण अंचल का चित्रण

गाँव-जंवार की भाषा में ही अपनी बात लिखने वाले रेणु को हिंदी साहित्य में आंचलिकता को एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने के लिये जाना जाता है। लोकगीत, लोकोक्ति, लोक संस्कृति, लोक भाषा और लोक नायक उनके कथा संसार के प्रमुख अंग हैं। उनके कथा साहित्य में आंचलिकता इस कदर घुली-मिली रहती है कि उनकी कथाओं का नायक अंचल ही हो जाता है। वर्ष 1954 में प्रकाशित उनकी कालजयी रचना 'मैला आंचल' का नायक मेरीगंज गाँव ही जान पड़ता है जिसके वातावरण में ये उपन्यास रचा गया है।

'मैला आंचल' उपन्यास में कोई केंद्रीय चरित्र या कथा नहीं है। ये घटनाप्रधान उपन्यास है। आजादी के तुरंत बाद के भारत के गाँवों की सामाजिक, आर्थिक समस्याओं को इसमें दिखाया गया है। नाटकीयता और किस्सागोई शैली में रचा गया यह उपन्यास हरेक बिंदु पर अंचल की कहानी कहता है-

"हुजूर, यह सुराजी बालदेव गोप है। दो साल जेहल खटकर आया है; इस गाँव का नहीं चन्नपट्टी का है। यहाँ मौसी के यहाँ आया है। खध्धड़ पहनता है, जौहिन्न बोलता है।"

मैला आंचल के पात्र अपनी जुबान में फक्कड़पने के साथ बातें करते हैं। इसके चरित्र अपने सिरजनहार के बंधे-बंधाए कानूनों और नियमों को तोड़कर बाहर निकल आते हैं और अपने जीवन को अपने मन के मुताबिक गढ़ने लगते हैं। इस तरह से रेणु के चरित्र लेखकों के द्वारा तय किये गए सींखचों में कसे न होकर आजाद तबियत के हैं। इसीलिये रेणु की रचनाओं को पढ़ते समय आपको यह लगता है कि आप उस कहानी के वातावरण का हिस्सा हैं और आप भी कहानी के साथ आगे बढ़ते जा रहे हैं।

रेणु का कथा संसार इसलिये भी ग्रामीण परिवेश और आजाद तबियत का था क्योंकि उन्हें गाँवो और आंदोलनों; दोनों ही चीजों से प्रेम था और वो उसे जीते भी थे। एक बार उन्होंने यह कहा भी था-[10,11]

सामाजिक समस्याओं पर लेख

"मैं हर दूसरे या तीसरे महीने शहर से भागकर गाँव चला जाता हूँ। जहाँ मैं घुटने से ऊपर धोती या तहमद उठाकर; फटी गंजी पहने गाँव की गलियों में, खेतों में, मैदानों में घूमता रहता हूँ।"

इसके अलावा वे आंदोलनों में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे। भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के लिए रेणु ने अपनी पढ़ाई को बीच में ही छोड़ दिया था। जय प्रकाश नारायण द्वारा चलाए जा रहे छात्र आंदोलन में भी उनकी खूब हिस्सेदारी रहती थी। छात्र आंदोलन के समर्थन में ही उन्होंने भारत सरकार द्वारा दिये गए पद्मश्री पुरस्कार को पापश्री पुरस्कार कहते हुए लौटा दिया था।

रेणु सामाजिक समस्याओं पर सिर्फ चिंतन ही नहीं करते थे बल्कि उन सामाजिक समस्याओं के खिलाफ होने वाले आंदोलनों में हिस्सा भी लेते थे और उस आंदोलन के पक्ष में अपनी कलम भी चलाते थे। भारत के पड़ोसी राज्य नेपाल में राणाशाही के खिलाफ आंदोलन हो रहा था। रेणु ने इस आंदोलन में कोईराला समुदाय का साथ दिया और उन्होंने इसी मुद्दे पर 'नेपाली क्रांति कथा' नामक रिपोतार्ज भी लिखा।

किसानों की व्यथा का वर्णन

किसान भी रेणु के साहित्य का अहम हिस्सा थे। 'परती परिकथा' में उन्होंने किसानों की समस्याओं के साथ ही आंचलिक प्रेम को भी चित्रित किया है। वैसे तो इस उपन्यास का नायक परानपुर गाँव ही है। फिर भी इस नायक के इर्द गिर्द कुछ महत्त्वपूर्ण पात्र हैं जिनके माध्यम से न सिर्फ कहानी आगे बढ़ती है बल्कि ग्रामीण समाज की विभिन्न समस्याएँ भी सामने आती हैं। इस उपन्यास में मलारी नामक एक दलित महिला है जिसे ऊँची जाति के एक पुरुष सुमंत से प्यार हो जाता है। दोनों शादी भी करते है मगर उन्हें शादी करने के बाद गाँव छोड़कर जाना पड़ता है।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

मारे गए गुलफाम!
रेणु की एक कहानी 'मारे गए गुलफाम' पर 'तीसरी कसम' नाम से फिल्म भी बनी। राजकपूर और वहीदा रहमान के अभिनय से सजी इस फिल्म के निर्माता मशहूर गीतकार शैलेन्द्र थे। उन्होंने इस फ़िल्म में अपनी कमाई का अधिकांश हिस्सा लगा दिया था। मगर ये फिल्म फ्लॉप हो गई थी और ये भी कहा जाता है कि इसी फ़िल्म के फ्लॉप होने की वजह से शैलेन्द्र की जान गई। रेणु की कहानी पर आधारित एक दूसरी फिल्म 'डागडर बाबू' की आधी फ़िल्म की रील बनकर तैयार हो गई थी, फिर इसे रोक दिया गया और वह कभी रिलीज ही नहीं हो पाई।[12,13]

समय से आगे चलने वाले रेणु
रेणु जी न सिर्फ एक कुशल रचनाकार थे बल्कि वह एक युगबोधी और दूरदर्शी व्यक्ति भी थे। रेणु आज से पाँच दशक से भी पहले चुनावों में पेड न्यूज और मीडिया-राजनीतिक दल गठजोड़ की बात करते थे। रेणु ने 17 फरवरी 1967 को बिहारी तर्ज नामक एक लेख लिखा था। इस लेख में उन्होंने लिखा-

"अ- राजनीतिक लोगों का कहना है कि चुनाव के समय पत्रकार की पाँचों उंगलियाँ घी में रहती हैं।"

रेणु जी एक जातिविहीन समाज की कल्पना करते थे और उन्होंने अंतरजातीय विवाह भी किया था। कहा जाता है कि उनके परती परिकथा उपन्यास की मलारी का किरदार उनके गाँव औराही हिंगना की ही एक महिला दुलारी से प्रेरित था। साल 2015 में इन्हीं दुलारी की पोती अमृता और फणीश्वरनाथ रेणु के पोते अनंत का प्रेम विवाह संपन्न हुआ।अनंत-अमृता के प्रेम विवाह से रेणु के जातिविहीन समाज के सपने को मुकम्मल उड़ान भी मिलती है।

पिछले साल अर्थात 4 मार्च 2021 को फणीश्वरनाथ रेणु की जन्मशती थी। इस उपलक्ष्य पर बिहार सरकार द्वारा रेणु महोत्सव मनाने की बात कही गई थी मगर कोरोना के चलते ये महोत्सव मनाया न जा सका। आज जब गाँवो में सुशासन की बात चलती है और योजनाएँ बनती हैं तो ऐसे में रेणु को याद किया जाना लाजिमी है जिन्होंने आज से 68 साल पहले ही गाँवो को सुराज फल यानी स्वराज्य के फल का स्वाद चखाने के लिये वैचारिक क्रांति की थी।

IV. परिणाम

फणीश्वर नाथ रेणु जी की भाषा खड़ी बोली है। फणीश्वर नाथ रेणु जी ने अपनी रचनाओं में लोकोक्तियो और मुहावरों, भावपूर्ण संवाद का प्रयोग किया है इसी के साथ ही रचनाओं में तद्भव शब्दों को भी देखा जा सकता है। फणीश्वर नाथ रेणु जी की भाषा सरल, सहज तथा मार्मिक है।[14,15]

फणीश्वर नाथ रेणु जी ने हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है इन्होंने "आंचलिक उपन्यास" को लिखने की प्रथा को शुरू किया । "मैला आंचल इनका प्रसिद्ध उपन्यास है। फणीश्वर नाथ रेणु जी की लेखन शैली मुंशी प्रेमचंद्र जी से काफी मिलती जुलती थी और इन्हें आजादी के बाद के प्रेमचंद्र की संज्ञा भी दी जाती है।

V. निष्कर्ष

फणीश्वरनाथ रेणु आंचलिक उपन्यास और नई कहानी दौर के विशिष्ट कथाकार हैं। वे हिंदी के पहले कहानीकार हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान और टेक्नोलॉजी के प्रवेश का चित्र खींचते हैं। वे आधुनिकताबोध और तकनीक को सामाजिक पिछड़ेपन से मुक्ति का माध्यम बनाते हैं। यह एक यथार्थ है कि जब अति पिछड़े क्षेत्र में विज्ञान और टेक्नोलॉजी का प्रवेश होता है, तब उन क्षेत्रों में पुराने विश्वासों के कारण विरोध होता है। रेणु इस सामाजिक जड़ता, अज्ञानता तथा सामंती मानसिकता को चिह्नित कर लेते हैं। रेणु अपनी कहानियों में नए यथार्थ को प्राथमिकता देते हुए परंपरागत पिछड़ेपन के चिह्नों का विरोध करते हैं। उन्होंने 'ठुमरी', 'अगिनखोर', 'रसप्रिया', आदिम रात्रि की महक', 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम', 'पहलवान की ढोलक' आदि कहानियों में समकालीन यथार्थ को एक कलात्मक ऊँचाई प्रदान की है। उन्होंने ग्रामीण जीवन की भाषा, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार और जीवन-अनुभवों को नए शिल्प से जोड़कर संवेदनात्मक विस्तार ही नहीं दिया, विवेकपरकता का भी महत्व स्थापित किया।
रेणु ने भारतीय समाज को तीन सरणियों में रखकर देखा है- ग्राम समाज, नागरिक समाज और राजनीतिक समाज। उनकी रुचि राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर जो मानवीय है, सुंदर है लोकतांत्रिक है, उसके प्रति है। वे हिंदी के एक 'एक्टिविस्ट लेखक' के तौर पर भी उभरते हैं। जिस तरह प्रेमचंद के यहां भारत के आमजन को लेकर गहरी संवेदना है, वैसी ही रेणु के यहां भी है।[15,16]

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

एक बार कथाकार सुवास कुमार रेणु से मिलने उनके गांव जाते हैं। बातचीत के दौरान रेणु कहते हैं- 'धान की इतनी अच्छी फसल, जितनी अच्छी इस साल है, हो तो खेती करने में कविता करने का आनंद है। खेती और कविता में जरा भी फर्क नहीं लगता। मेरे विचार से तो अभी एक बीघा खेत में खेती कर लेना पांच लेख और पांच कहानियाँ लिखने से ज्यादा फायदेमंद है।' (रेणु रचनावली, भाग 4)। यह माटी से जुड़े होने का बयान है। यह प्रतिबद्धता है। किसान जीवन के सुख-दुख से जुड़ा। उनके ऐसे विचारों से लगता है कि प्रेमचंद की तरह रेणु का आनंद जन जीवन के आनंद से जुड़ा है।

रेणु वर्तमान यथार्थ के साथ जातीय स्मृतियों और परंपराओं का संस्कार लेकर चलते हैं। वे प्रेमचंद की तरह सांप्रदायिक सद्भाव बचाकर रखना चाहते हैं। आज के नेता सत्ता के लोभ में नैतिक रूप से विपन्न हैं। इसलिए पूंजी के बल पर धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्र के आधार पर लोगों को बांटने के अलावा सत्ता तक पहुंचने का रास्ता उन्हें नहीं मिलता।

रेणु की किसानों के प्रति अंतरंगता उन्हें बड़े मनवाले एक्टिविस्ट लेखक के रूप में परिपक्वता प्रदान करती है। रेणु अपनी जीवन यात्रा में गांवों के न जाने कितने नर-नारियों से मिलते हैं। उनसे मिली सहृदयता और प्रेम से वह खुद को समृद्ध करते हैं। इस यात्रा में कई बार उन्हें स्वार्थी, लोभी, पतित लोग भी मिलते हैं। आज कृषकों का जीवन और संघर्ष फिर एजेंडे पर है। वैश्वीकरण के दौर में उनका जीवन नई चुनौतियों के सामने है। ऐसी स्थिति में रेणु पर चर्चा का एक खास महत्व है। यह चर्चा हमारी राष्ट्रीय भावना को भय और घृणा से मुक्त करने की दिशा की ओर ले जाती है। रेणु ने अपने जीवन में स्वतंत्रता को देश की जनता के मुक्ति-आख्यान के रूप में रचना चाहा था। वह चुनौती एक बार फिर हमारे सामने है।

रेणु की सामाजिक और राजनीतिक सक्रियता जीवन के अंतिम दिनों तक बनी हुई थी। वे बीमारी की हालत में भी देश की दशा से चिंतित थे। वे आपातकाल के नाम पर सरकार द्वारा दबाई जा रही गरीबी और भुखमरी की आवाज को बर्बर और अलोकतांत्रिक मानते थे। आज कितने लेखक हैं जो लेखन और सामाजिक जीवन में रेणु की तरह सक्रिय हैं और खुलकर सवाल पूछ सकते हैं? ऐसे अनेक प्रश्न हैं जो राष्ट्रीय निर्माण की असमाप्त परियोजना के साथ खड़े हैं। रेणु सच में ऐसे मनई और निडर लेखक थे जिन्होंने पूरा जीवन 'सबार ऊपरे मानुष सत्य' को अपना मार्ग बनाया था।[16]

संदर्भ

1. पद्म पुरस्कार आधिकारिक सूची भारत सरकारपोर्टल.
2. फणीश्वर नाथ रेणु प्रोफ़ाइल सीज़नइनइंडिया .
3. आनंद प्रकाश द्वारा परिचय (2007)।कलंक से मुक्ति = कलंकमुक्ति। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। पृ. 2.आईएसबीएन 978-0-19-568599-2.
4. तिसरी क़सम द थर्ड वॉ यूनिवर्सिटी ऑफ़ आयोवा , 2005।
5. फणीश्वर नाथ रेणु IMDb पर
6. "फणीश्वर नाथ रेणु की लघुकथा सिल्वर स्क्रीन पर" । 17 अक्टूबर 2017.
7. "फणीश्वर नाथ रेणु जीवनी: पुस्तकें, पुरस्कार और तथ्य" । कौन-कौन है । 30 जनवरी 2018 । 4 दिसंबर 2021 को लिया गया ।
8. अभिव्यक्ति पर फणीश्वर नाथ रेनू । अभिव्यक्ति-hindi.org. 7 नवंबर 2018 को पुनःप्राप्त.
9. यूट्यूब पर वीडियो
10. "ऑरा वर्चुअल कैंपस" । से संग्रहित है असली 3 मार्च 2016 को । पुनः प्राप्त किया 10 मई 2014 .
11. "मैला आंचल के प्रेरक का निधन" । द टेलीग्राफ - कलकत्ता (कोलकाता) । 15 जनवरी 2011। मूल से 14 अगस्त 2017 को संग्रहीत । 14 अगस्त 2017 को लिया गया ।
12. फणीश्वरनाथ रेणू और सतीनाथ भादुड़ी के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन: डॉ. ब्रजकिशोर झा, आनंद प्रकाशन, कोलकाता
13. धोंधायचरित मानस, सतीनाथ भादुडी (हिन्दी अनुवाद: मधुकर गंगाधर), लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद
14. डॉ. रेनू शाह (एसोसिएट प्रोफेसर, जेएनवी यूनिवर्सिटी जोधपुर)। फणीश्वर नाथ रेणु का कथा शिल्प । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) अनुदान के तहत प्रकाशित । 1990.
15. मारे गये गुलफाम , फणीश्वर नाथ 'रेणु' (हिन्दी)
16. तीसरा व्रत और अन्य कहानियाँ: और अन्य कहानियाँ । कैथरीन जी. हैनसेन द्वारा अनुवादित। चाणक्य प्रकाशन, 1986. आईएसबीएन 81-7001-013-6 ।

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com